एक अकेली क्या नहीं कर सकती!

वीणा शिवपुरी

गांव में, शहर में, पढ़ी-लिखी या निरक्षर बहुत-सी औरतें कहती हैं एक अकेली क्या कर सकती है? उसके जवाब में यही कहना चाहिए—

"एक अकेली क्या नहीं कर सकती।"

जमूरी ने की अगुवाई

राजस्थान के एक गांव की इस सीधी-सादी, दुबली-पतली औरत की कहानी जिस किसी ने सुनी उसने भी यही कहा। दस साल पहले जमूरी विधवा होकर अपने मां-बाप के घर लौट आई थी। तबसे वह अलवर के पास गुवड़ा कलोट नाम के छोटे से गांव में रहती है। इस इलाके में बहुत कम बारिश होती है और वह भी कहीं-कहीं बिलकुल नहीं।

जमूरी के गांव में भी सूखा पड़ रहा था। उस इलाके में काम करने वाली एक स्वयं सेवी संस्था ने जगह-जगह जोहड़ बना कर बारिश के थोड़े बहुत पानी को रोकने की योजना बनाई। उनका कहना था इस तरह से धीरे धीरे वहां जमीन के नीचे के पानी का स्तर ऊंचा उठेगा। सारे गांव ने मुफ्त मेहनत करने का वादा किया। जिस दिन काम शुरु होना था वहां सिवाय जमूरी के कोई नहीं पहुंचा।

एक अकेली

जमूरी ने यह नहीं कहा कि "मैं अकेली क्या कर सकती हूं?" या "जब बाकी लोग कुछ नहीं करना चाहते तो मैं क्यों करूं?" जमूरी लगन की पक्की औरत थी। बस, अकेली ही जुट गई। मिट्टी खोदती, तगारी भर के उठाती और जोहड़ की जगह डालती। फिर मिट्टी खोदती, तगारी भर के उठाती और जोहड़ की जगह डालती।

कहते हैं कि चिड़िया समुद्र खाली नहीं कर सकती लेकिन इस चिड़िया ने तो समुद्र खाली करके दिखला दिया।

एक दिन बीता, दो दिन बीते, सप्ताह बीते। जमूरी अकेली काम में लगी रही। बयालीस दिनों में जमूरी ने अपने दो हाथों से मिट्टी की ऊंची मज़बूत दीवार खड़ी कर दी। जमूरी की मेहनत और उस साल की बारिश ने गांव के लिए पानी भरा जोहड़ तैयार कर दिया।

ये सब क्यों किया

जब लोगों ने पूछा कि भला तूने इतना सब क्यों किया तो जमूरी का भोलाभाला उत्तर था, मेरे गांव के लिए।

इस सरल उत्तर में कितनी बड़ी सचाई छुपी है। हममें से कितने दूसरों के लिए कुछ करते हैं। अगर लोग यूं ही अपने मुहल्ले, अपने गांव, अपने देश और अपनी दुनिया के लिए थोड़ा-सा भला काम करने लगे तो यह संसार कितनी खूबसूरत जगह बन सकती है। सिर्फ़ ज़रा सोचने की ज़रूरत है। जब जमूरी अकेली अपने गांव के

लोगों और जानवरों की जान बचा पाई तो हम सब कुछ क्यों नहीं कर सकते।

सिर्फ़ इतना ही नहीं

जमूरी की कहानी यहीं खत्म नहीं होती। उसके बनाए जोहड़ की मिट्टी की दीवार तेज़ी से बहते पानी से टूट न जाए इसके लिए एक और दीवार बनानी थी।

अब तो सारा गांव मदद को तैयार था। फिर भी जमूरी सबसे आगे बढ़ी। उसने बाकी लोगों से दस दिन ज्यादा काम किया। जब स्वयं सेवी संस्था के लोगों ने उसे पैसे देने चाहे तो जमूरी ने साफ़ मना कर दिया। मैंने ये सब पैसे के लिए नहीं किया।

जमूरी के गांव में शराब की लत ने भी घर कर रखा है। आज वो शराबखोरी को दूर करने में लगी हुई है। धरने देती है, भूख हड़ताल करती है पर अपने गांववालों को शराब पीने से रोकती है। आज भी उसकी प्रेरणा वही है। "मेरे गांव के लोगों का सर्वनाश हो रहा है तो मेरा फर्ज है कि मैं कुछ करूं।"

स्वयं सेवी संस्था ने पिछले चार सालों से लगातार वहां जंगल बचाओ यात्रा का आयोजन किया है। उसमें हमेशा जमूरी ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। उसने अपने घर के पास बारह पीपल और बड़ के पेड़ लगाए हैं और आसपास की पहाड़ी पर पचास ढाक और ढाकड़ के पेड़। उसे देख कर अब सब लोग पेड़ लगाने और पेड़ बचाने के काम में जुड़ने लगे हैं।

जमूरी गांव में औरतों की समस्याओं से भी जुड़ती है। कितने ही घरों की बेटियां बचपन में ब्याहने की बजाए आज पढ़ने स्कूल जा रही हैं।

अब वो खुद भी पढ़ना लिखना सीखना चाहती है। जरूर एक दिन उसका यह सपना भी पूरा होगा।

जमूरी ने पाया मान

जमूरी पूरे गांव में एक मिसाल है। अनपढ़, गरीब, अनजान औरत जरूर लेकिन कितनी समझदार, कितनी हिम्मती। उसकी हिम्मत को सभी ने सराहा। उस इलाके की स्वयं सेवी संस्था ने उसे "पर्यावरण प्रेमी पुरस्कार" से सम्मानित किया। इन सबने जमूरी पर कोई असर नहीं डाला। आज भी वह अपनी दस बकरियों, चार भैंसों और दो गायों को पालती है। मेहनत कर के अपना पेट भरती है और अपने गांव के लिए कुछ भी करने में सदा आगे रहती है। □